EDII

Nav Bharat Times

October 15, 2023

'तकनीक का दुरुपयोग चिंताजनक'

एकेटीयू के स्टार्टअप प्रदर्शनी में बोलीं राज्यपाल आनंदीबेन पटेल

■ एनबीटी सं, लखनऊ

तकनीक का दुरुपयोग चिंता का विषय है। तकनीक मानव कल्याण के लिए है, मगर इसका दुरुपयोग हो रहा है। एआई भी इससे अछूता नहीं है। सोनोग्राफी के जरिए गर्भ में ही भ्रूण हत्या हो रही है। ऐसे में यह शिक्षा के शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वह छात्रों को सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करें। ये बातें राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहीं। वह रविवार को एकेटीयू में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम की जयंती पर मनाए गए इनोवेशन डे के मौके पर हुए स्टार्टअप संवाद 2.0 कार्यक्रम में बोल रही थीं। यह कार्यक्रम एकेटीयू के इनोवेशन हब और आई हब गुजरात के सहयोग से हुआ। इस बीच राज्यपाल ने छात्रों को धैर्य के साथ कठिन परिश्रम करने की सलाह दी।

भारत में 90 हजार से ज्यादा स्टार्टअप पंजीकृत : कार्यक्रम में मुख्य सचिव दुर्गाशंकर मिश्र ने कहा कि हाल में आई स्टार्टअप रिपोर्ट के अनुसार भारत में 90 हजार से ज्यादा स्टार्टअप पंजीकृत हैं जो कि दुनिया में चौथे स्थान पर है। वहीं स्टार्टअप के लिए इको सिस्टम के मामले में भारत दुनिया में तीसरे पायदान पर है। उत्तर प्रदेश में दस हजार के करीब स्टार्टअप पंजीकृत हैं। इससे पता चलता है कि पिछले कुछ वर्षों में स्टार्टअप को लेकर सरकार की ओर से किए जा रहे प्रयास सही दिशा में जा रहे हैं।

'ग्रामीण युवा भी स्टार्टअप अपना रहे' : कार्यक्रम में मुख्य सचिव एमएसएमई अमित मोहन प्रसाद ने कहा कि युवाओं की आंखों में सपने हैं और वे कुछ बड़ा करना चाहते हैं। ऐसे में उन्हें अवसर देने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। वहीं प्लानिंग विभाग के प्रमुख सचिव आलोक कुमार ने कहा कि पिछले दो तीन सालों में स्टार्टअप को लेकर सरकार की ओर से चल रहे अभियान का असर अब दिखने लगा है। युवा स्टार्टअप के लिए आगे आ रहे हैं।

एकेटीयू पहुंचीं राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने देखे छात्रों के मॉडल।

इन्होंने जीता पुरस्कार

ग्रासरूट स्टार्टअप : विजेता : राजकुमार मिश्र, कबाड़ में रखी बोलेरो पर धान कूटने की मशीन (₹1 लाख)
प्रथम रनरअप : प्रिंस कुमार, धान से घास निकालने की मशीन (₹75 हजार)
सेकेंड रनरअप : रोहित कुमार, मोडिफाइड कार्बनैस मशीन (₹50 हजार)
सांत्वना पुरस्कार : अर्पित प्रसाद, गोभी काटने की मशीन (₹25 हजार)
सुभाष पटेल, सोलर चलित मशीन (₹25 हजार)
स्टार्टअप : विजेता : एरोटेक इनोवेशन (₹1 लाख)
प्रथम रनरअप : शिवानी इंटरप्राइजेज (₹75 हजार)
सेकेंड रनरअप : नेक्स्टआ रोबोटिक्स प्राइवेट लिमिटेड (₹50 हजार)

'स्टार्टअप इको सिस्टम का दिख रहा परिणाम'

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा कि प्रदेश में स्टार्टअप इको सिस्टम का परिणाम देखने को मिल रहा है। युवा अब नौकरी करने की बजाए रोजगार देने वाले बन रहे हैं। यूपी इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन की प्रबंध निदेशक नेहा जैन ने प्रदेश के स्टार्टअप को सहयोग देने और हर स्तर पर मदद करने की बात कही। वीसी प्रो. जेपी पांडेय ने कहा कि पिछले दो वर्षों में विवि ने प्रदेश में स्टार्टअप इको सिस्टम बनाने का प्रयास किया है जिससे हर क्षेत्र में स्टार्टअप हो सके। कार्यक्रम में आई हब गुजरात के अधिकारी कुलसचिव डॉ. आयुष श्रीवास्तव, प्रो. वंदना सहगल, डॉ. आलोक सिंह, डॉ. डीपी सिंह, डॉ. अनुज कुमार शर्मा, इनोवेशन हब के हेड महीप सिंह भी शामिल रहे।

कई कंपनियों से साइन किए एमओयू

प्रदेश के स्टार्टअप को आगे बढ़ाने और उनके मेंटरशिप के लिए गवर्नर की मौजूदगी में एकेटीयू इनोवेशन हब का कई कंपनियों के साथ एमओयू साइन हुआ। इसमें आई हब गुजरात, काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी, यस बैंक, वी फाउंडर सर्किल, वाधवानी फाउंडेशन, हेडस्टार, रीमिंग सेल्स प्राइवेट लिमिटेड, कॉफनिफी वेंचर्स से एमओयू हुआ। इस बीच एकेटीयू की ओर से गवर्नर को बच्चों को देने के लिए प्रेरणादायी किताबें भेंट की। वहीं मौके पर कलाम परिक्रमा लॉन्च किया गया जिसके जरिए एकेटीयू स्टार्टअप खोजेगा।

भांग के पौधे से बने कपड़ों ने खींचा ध्यान

■ एनबीटी सं, लखनऊ : एकेटीयू में इनोवेशन हब और आई हब गुजरात के सहयोग से स्टार्टअप संवाद 2.0 का आयोजन किया गया। इस मौके पर कृषि, तकनीक, स्वास्थ्य समेत अन्य क्षेत्र से जुड़े 48 स्टार्टअप का प्रदर्शन किया गया। इस बीच भांग के पौधे से बने कपड़ों के स्टार्टअप ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। इस मौके पर मुख्य सचिव दुर्गाशंकर मिश्र भी शामिल रहे।

एकेटीयू में स्टार्टअप संवाद 2.0 में 48 स्टार्टअप ने अपने प्रोडक्ट प्रदर्शित किए

भारत हेम्प एग्रो प्राइवेट लिमिटेड के आयुष सिंह भांग के पौधे से तैयार रेशों से कपड़े बना रहे हैं। आयुष बताते हैं कि भांग से बनने वाले कपड़ों में एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण पाए जाते हैं। इन कपड़ों के उपयोग से त्वचा संबंधी कई बीमारियों में लाभ मिलता है। इतना ही नहीं, कपड़ों के अलावा भांग से जुड़े कई उपयोगी उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। आयुष बताते हैं कि भांग से तैयार रेशे काफी मजबूत होते हैं। ऐसे में इनसे बनने वाले कपड़े भी टिकाऊ होते हैं। भांग में सिर्फ पत्तियों में नशा होता है, जबकि कपड़े को तैयार करने के लिए भांग के पौधे के तने, डंठल और जड़ों का इस्तेमाल होता है। इसके बीज से तेल तैयार होता है जिसकी अंतरराष्ट्रीय मार्केट में काफी ज्यादा कीमत है।

NBT Lens — सम्मिलित खबरों के अंदर की बात

भांग की खेती क्यों है जरूरी?

उत्तर प्रदेश में भांग की खेती के लिए लाइसेंस की जरूरत होती है। ऐसा माना जाता है कि भांग का इस्तेमाल ज्यादातर नशे के रूप में होता है। मगर भांग के पौधे से अब कपड़े और अन्य उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। आयुर्वेदिक औषधियों में इसके बढ़ते प्रयोग के चलते उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश की सरकारें भी इसकी खेती को मंजूरी देने की तैयारी में जुटी हुई हैं। भांग का पौधा कपास के विकल्प के रूप में तैयार हो रहा है। यही कारण है कि महाराष्ट्र में बड़े पैमाने पर कपास की खेती होती है। मगर कपास की खेती में जहां 7 महीने लगते हैं, वहीं भांग का पौधा 4 महीने में तैयार हो जाता है। भांग से बनी हुई चीजें इको फ्रेंडली हैं और इन पौधों से कई वैल्यू ऐडेड प्रोडक्ट तैयार किए जा सकते हैं।